ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 28 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 05 जून, 2023 से रविवार 11 जून, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

10 दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर संपन्न

राष्ट्ररक्षा एवं मानव सेवा का संकल्प लेकर आगे बढ़ें आर्यवीर -योगी सूरी

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जीवन का आदर्श बनाएं युवा पीढ़ी -सुरेन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से बलवान होकर राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के लिए समर्पित होना ही चाहिए। इसीलिए आर्य समाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल हमेशा देश की युवा पीढ़ी को राष्ट्रभक्ति, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, के साथ साथ व्यायाम, प्राणायाम, योगासन, लाठी, भाला, तलवार, मलखम आदि की शिक्षा देने हेतु मई, जून के महीनों में विशेष आवासीय शिविरों का पूरे देश मे आयोजन करता है। इस वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सान्निध्य और सहयोग से आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा 500 से अधिक आर्य वीरों को 26 मई से 4 जून 2023 तक, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद के प्रांगण में चरित्र निर्माण और आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें आर्य वीरों ने अपने जीवन को तप, त्याग के वातावरण में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा प्राप्ति के साथ साथ सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों के निर्देशन में अपना सर्वांगीण विकास किया। शिविर में स्वामी विदेह योगी जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, ब्र.संदीप आर्य जी की बैद्धिक कक्षाओं से शिविरार्थियों को लगातार लाभ प्राप्त होता रहा।

जून की गर्मी में शिवरार्थियों की नियमित दिनचर्या, अनुशासित और व्यवस्थित समय सारणी तप, त्याग और

- शेष पृष्ठ 4 व 5 पर

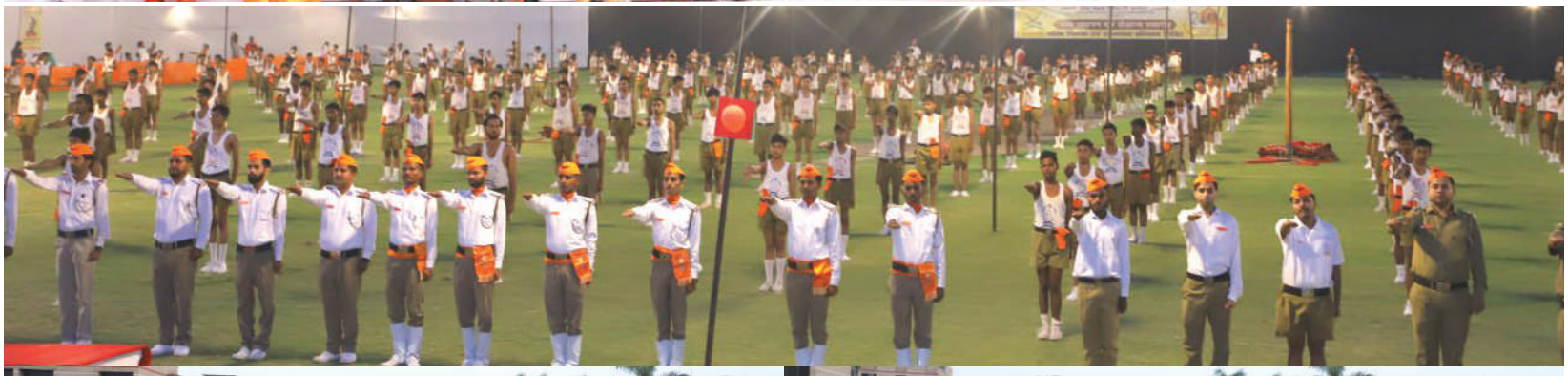

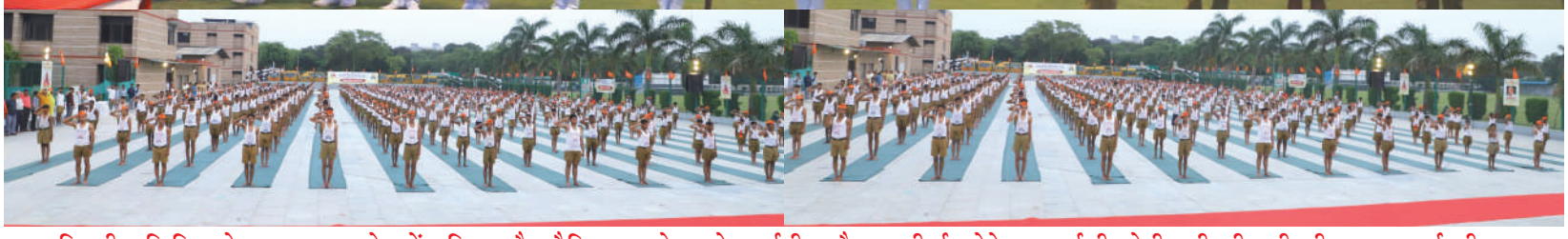

10 दिवसीय शिविर के समापन समारोह में प्रतिज्ञा और सैनिक नमस्ते करते आर्यवीर और आशीर्वाद देते हुए सर्वश्री योगी सूरी जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, अजय सहगल जी, आनंद स्वरूप जी, धर्मपाल आर्य जी, सुरेन्द्र रैली जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, स्वामी विदेह योगी जी, डॉ. सत्यवीर शास्त्री जी एवं अन्य महानुभाव।

आचार्य श्री बालकृष्ण जी महाराज के सान्निध्य में यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ करते हुए आर्यवीर तथा आचार्य श्री विशेष उदबोधन देते हुए।

वेदवाणी-संस्कृत

मुझे सबका प्यारा बनाओ

वेद-स्वाध्याय

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।।
-अथर्व० 19 । 62 । 1
ऋषिः-ब्रह्मा।। देवता-ब्रह्मणस्पतिः।। छन्दः-अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ- हे प्रभो! **मा**=मुझे **देवेषु**=देवों में (ब्राह्मणों में) **प्रियं कृणु**=प्यारा करो **मा**=मुझे **राजसु**=राजाओं में (क्षत्रियों में) **प्रियं कृणु**=प्यारा करो, **सर्वस्य पश्यतः**=सब देखने वालों का भी **प्रियम्**=प्यारा करो, **उत शूद्रे**=शूद्र में भी और **उत आर्ये**=आर्य में भी, सबमें, मुझे प्यारा बनाओ।

विनय- हे मेरे प्यारे प्रभो! तुम मुझे सबका प्यारा बनाओ। मैं यदि सचमुच तुम्हारा प्यारा बनना चाहता हूँ तो मुझे तुम्हारे इस सब जगत् का प्यारा बनना चाहिए। तुम तो इस जगत् में सर्वत्र हो, छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे सभी प्राणियों में मन्दिर बनाकर बसे हुए हो। यदि इन रूपों में मैं तुमसे प्यार न कर सकूँ तो मैं तुम्हें प्यारा कहके क्यों कर पुकार सकूँ? ये सांसारिक लोग बेशक अपने से बड़ों, बलवानों, धनवानों और प्रतिष्ठावालों के ही प्यारे बनना चाहते हैं, अपने से छोटों, गरीबों, दलितों और असहायों के प्यारे बनने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। ये बेशक अपने राजाओं और स्वामियों का प्रेम पाना चाहते हैं, किन्तु अपनी प्रजा और नौकरों का प्रेम पाने की कभी इच्छा नहीं करते, परन्तु इसी में तो तुम्हारे सच्चे प्रेमी होने की परीक्षा होती है, क्योंकि इन गरीबों, पीड़ितों असहायों का प्रेम चाहना ही असल में तुमसे प्रेम करना है। बलियों, धनियों और राजाओं से प्रेम की इच्छा करना तो सांसारिक बल से, सांसारिक धन से, सांसारिक प्रभुत्व से प्रेम करना है, तुमसे प्रेम करना नहीं है। इसलिए मुझे तो तुम जहाँ देवों और राजाओं का प्यारा बनाओ, वहाँ इन सब देखने वाले सामान्य लोगों का तथा नौकरों और सेवकों का भी प्यारा बनाओ। जहाँ ब्राह्मणों और क्षत्रियों का प्यारा बनाओ वहाँ इस सामान्य प्रजाओं (वैश्यों) और शूद्रों का भी प्यारा बनाओ। शूद्रों और आर्यों का, नीचों और ऊँचों का, शिष्यों और गुरुओं का, सेवकों और स्वामियों का, अधीनों और अधिकारियों का, सब छोटों और बड़ों का मुझे प्यारा बनाओ। मुझे ऐसा बनाओ कि इस संसार में जो कोई मुझे देखे, मेरे सम्पर्क में आये, वह मुझसे प्यार करे। हे प्रभो! मैं तो तुम्हारे इस सब संसार से प्रेम की भिक्षा माँगता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि जब तक मैं तुम्हारे इस छोटे-बड़े समस्त संसार से प्रेम नहीं करूँगा तब तक, हे मेरे प्यारे! मैं कभी तुम्हारे प्रेम का भाजन न हो सकूँगा, तुम्हारे प्रेम का अधिकारी न बन सकूँगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दुर्घटनाओं में केवल जान-माल का नुकसान नहीं होता, हंसते-खेलते परिवार भी मिट जाते हैं

संपादकीय

मानवीय मूल्यों के प्रति सजग रहें- राजनायक

जब कहीं पर भी कोई प्राकृतिक आपदा अथवा दुर्घटना घटित होती है तब केवल जान-माल का नुकसान ही नहीं होता बल्कि इसके साथ ही जहां माताओं की गोद सूनी हो जाती है वहीं बच्चों के सिर से माता-पिता का साया छिन जाता है, बच्चे अनाथ हो जाते हैं, महिलाओं के सुहाग उजड़ जाते हैं, बहनों के भाई और भाईयों की बहनें काल के गाल में समा जाती हैं। हंसता खेलता मासूम बचपन और किशोरावस्था की तरुणाई, युवाओं का उत्साह और बुजुर्गों का अनुभव सब कुछ अचानक क्रूर मौत की भेंट चढ़ जाता है। ऐसे दुखद माहौल में अगर कुछ शेष बचता है तो वह केवल हाहाकार, चित्कार, दुःख, पीड़ा, संताप व पश्चाताप और संवेदनाएं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में मानवता की यही पुकार होती है कि जो अकस्मात मृत्यु की गोद में सो गए उनकी आत्माओं की शांति, सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाए और जो घायल अवस्था में हैं उन्हें उचित उपचार प्रदान किया जाए। किंतु जो उनके शोकाकुल परिवार जन होते हैं उनके प्रति सही मायनों में सहानुभूति पूर्वक संवेदनशीलता व्यक्त करना बहुत जरूरी होता है। क्योंकि जो दुर्घटना का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हो गए वह तो ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार अगला जन्म लेगा और जो घायल होकर अस्पताल में इलाज करा रहे हैं वह भी शारीरिक कष्ट भोगने के लिए बेबस हैं। किंतु जो उनके परिवारजन हैं, जो उनके रिश्ते नातों वाले हैं, उनकी मानसिक हालत क्या होती है? यह सोचकर भी हृदय कांप उठता है।

2 जून, 2023 की शाम लगभग 7 बजे जब सूर्य अस्ताचल की ओर जा ही रहा था तब ओडिशा के बालासोर में बाहानगा बाजार स्टेशन के पास हुए भयंकर रेल दुर्घटना में 288 लोग मृत्यु की गोद में सो गए, 1000 हजार से अधिक अस्पतालों में उपचाराधीन हैं और इस तरह देखते ही देखते हजारों परिवारों, रिश्ते नाते वाले लोग दुःखों के अंधेरे में डूब गए, उनमें से कुछ लोगों के सामने तो इतनी विकट समस्या है कि वे लाशों के ढेर में से अपने स्वजनों के मृतक शरीर अब तक भी नहीं पहचान पा रहे हैं। क्योंकि यह रेल हादसा इतना भयंकर था कि इसमें मरने वालों के शरीर और चेहरे पूरी तरह से क्षत विक्षत हो गये। ओडिशा के मुख्य सचिव प्रदीप जेना के अनुसार अभी तक कुल 288 मृतकों में से 95 शवों का जिला स्तर पर हस्तांतरण किया गया है। 193 शवों को भुवनेश्वर लाया गया, जिनमें से 110 शवों की पहचान हुई है। कुल 288 में से 205 शवों की पहचान ही हो पाई है। 83 शवों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है।

आर्य समाज की ओर से रेल दुर्घटना के मृतकों के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि

घायलों के शीघ्र स्वस्थ्य होने की ईश्वर से प्रार्थना

"जब कहीं पर भी कोई प्राकृतिक आपदा अथवा दुर्घटना घटित होती है तब केवल जान-माल का नुकसान ही नहीं होता बल्कि इसके साथ ही जहां माताओं की गोद सूनी हो जाती है वहीं बच्चों के सिर से माता-पिता का साया छिन जाता है, बच्चे अनाथ हो जाते हैं, महिलाओं के सुहाग उजड़ जाते, बहनों के भाई और भाईयों की बहनें काल के गाल में समा जाते हैं। हंसता खेलता मासूम बचपन और किशोरावस्था की तरुणाई, युवाओं का उत्साह और बुजुर्गों का अनुभव सब कुछ अचानक क्रूर मौत की भेंट चढ़ जाता है।

बालासोर रेल दुर्घटना में 288 लोगों की मृत्यु और हजारों लोगों का घायल होना अत्यनंत दुखद है। आर्य समाज इस अत्यंत दुखद दुर्घटना पर गहरी शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हुए सभी मृतकों की आत्माओं की शांति, सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिवार जनों के प्रति हृदय से संवेदनाएं व्यक्त करता है। इस दुर्घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए हमारी ईश्वर से प्रार्थना है।"

इस असहनीय दुर्घटना पर भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित सभी पक्ष और विपक्षी नेताओं ने गहरा दुःख और शोक व्यक्त किया, केंद्र और राज्य सरकारों ने मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए उनके परिजनों को मुआवजा देने की घोषणाएं की तथा घायलों के निःशुल्क इलाज और सहयोग का आश्वासन दिया। इस दुर्घटना के तुरंत बाद वहां के क्षेत्रीय लोगों ने जो राहत बचाव का कार्य किया वह भी अपने आप में प्रशंसनीय है। केंद्र सरकार, रेलवे मंत्रालय, ओड़ीसा और बंगाल आदि राज्यों की सरकारों ने भी अपने अपने दायित्वों का निर्वहन किया इसके लिए सभी साधुवाद के पात्र हैं। प्रधानमंत्री ने स्वयं घटनास्थल का दौरा किया और अस्पतालों में जाकर मरीजों का हालचाल पूछा, इसके साथ ओड़ीसा के मुख्यमंत्री ने और रेलमंत्री और पूरे प्रशासनिक अधिकारियों ने भी पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्य किया, जो कि अपने आपमें अनुकरणीय है।

लेकिन ऐसे दुखद वातावरण में एक यक्ष प्रश्न तो मन में अवश्य उठता है कि जैसे आज इस घटना को केवल 5 दिन ही बीते हैं और इतनी जल्दी हमारे राज नायक अपने मानवीय मूल्यों को तथा संवेदनाओं को ताक पर रखकर एक दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप लगाना शुरू कर देते हैं, एक तुच्छ स्वार्थ की राजनीति तुरंत शुरू कर देते हैं, अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग अलापना शुरू कर देते हैं। यहां पर प्रश्न यह नहीं है कि कौन ठीक है और कौन गलत है? यहां प्रश्न यह है कि इस अशोभनीय तथा अमानवीय संवेदनाहीन व्यवहार से मृतकों की आत्माओं के प्रति, उनके शोक संतप्त परिवारों के प्रति और घायलों के प्रति यह कैसी सहानुभूति और संवेदना

- शेष पृष्ठ 7 पर

संस्कार बोध

क्रमशः गतांक से आगे

यज्ञोपवीत या जनेऊ

-पं॰ गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

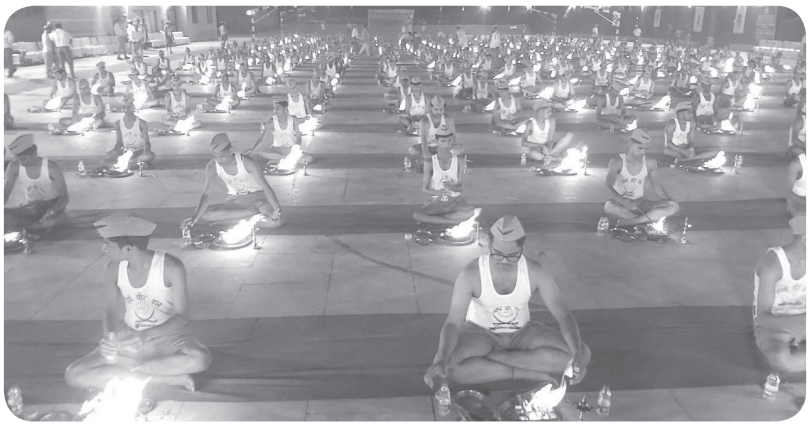

"आर्य वह है जो सव्रत है। दस्यु वह है जो अव्रत है। जो ऋणी होता हुआ ऋण को स्वीकार नहीं करता वही अव्रत है। आजकल यदि कोई कहे कि भारत-माता का हमारे ऊपर क्या ऋण है? हम उसके उद्धार के लिए क्यों यत्न करें? तो आप क्या कहेंगे? यही न कि धूर्त है, विश्वासघाती है, देश का शत्रु है। भारत माता का कपूत है। वेद इन्हीं भावों को 'दस्यु' शब्द से प्रकट करते हैं। जो अपने दायित्व को समझकर उसके चुकाने में दत्त-चित्तता का व्रत मनुष्य को आरम्भ में ही लेना होता है। कोई योग्य माता-पिता नहीं चाहते कि उनकी संतान दस्यु हो। इसलिए आरम्भ से ही आर्यत्व का बीज बोया जाता है। आर्यत्व का अर्थ ही दायित्व है। दायित्व आर्यत्व है आर्यत्व ही दायित्व है। इस दायित्व का व्रत दिलाने के समय ही बालक को तीन धागे का जनेऊ पहनाया जाता है, जिसको वेदों ने यज्ञ का महान साधन बताया है।"

आडम्बर न हो– अब यज्ञोपवीत का उपयोग संक्षेपतः लिखा जाता है। प्रत्येक संस्कार आन्तरिक शुद्धि का एक बाह्य चिन्ह है। इसमें आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनों ही कृत्य होते हैं। बाह्य कृत्य आत्मिक उन्नति के लिए होते हैं। परतु बाह्य कृत्य या बाह्य चिन्ह व्यर्थ नहीं होते। जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य पर शरीर की त्वचा और उसके सौन्दर्य का भी प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार संस्कार की क्रियाओं का है। इन संस्कारों में केवल यह देखना होता है कि व्यर्थ का आडम्बर तो नहीं है और इतना कठिन तो नहीं है कि उपयोग करने में समय या धन अधिक व्यय हो और उसके अनुकूल फल न निकले।

वैदिक ग्रन्थों में लिखा है कि मनुष्य उत्पन्न ही ऋणी होता है। प्रत्येक को देव-ऋण, ऋषि-ऋण, और पितृ-ऋण चुकाने पड़ते हैं। ऋणों की यह वार्ता ढकोसला नहीं है। आजकल राजनीति के शब्दों में कहा जाता है कि मातृ-भूमि का हम पर ऋण है क्योंकि उसी के जलवायु से हमारा शरीर बना है। यह ऋणों का भौतिक अंग (Material aspect) है। देव कहते ही जलवायु को हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त माता-पिता के भी तो हम ऋणी हैं जिन्होंने हमको जना और पाला। इसके बाद ऋषियों की कृपा से हम अपनी प्राचीन भाषा, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को प्राप्त कर सके। इसलिए ऋणों का आध्यात्मिक रूप ऋषि-ऋण है। इन ऋणों को चुकाने के प्रयत्न को ही वेदों में व्रत बताया गया है। नीचे के ऋग्वेदीय मंत्र से आर्य और दस्यु की पहचान की गयी है।

विजानी ह्यार्यान् ये च दस्यवो।
बर्हिष्मते
रन्धया शासदव्रतान्।।

(ऋ॰ 1। 51। 8)

अर्थात् हे राजन्! तुम शासन के हेतु जानो कि आर्य कौन है और अव्रत (व्रत रहित) दस्यु कौन है।

आर्य वह है जो सव्रत है। दस्यु वह है जो अव्रत है। जो ऋणी होता हुआ ऋण को स्वीकार नहीं करता वही अव्रत है। आजकल यदि कोई कहे कि भारत-माता का हमारे ऊपर क्या ऋण है? हम उसके उद्धार के लिए क्यों यत्न करें? तो आप क्या कहेंगे? यही न कि धूर्त है, विश्वासघाती है, देश का शत्रु है। भारत माता का कपूत है। वेद इन्हीं भावों को 'दस्यु' शब्द से प्रकट करते हैं। जो अपने दायित्व को समझकर उसके चुकाने में दत्त-चित्तता का व्रत मनुष्य को आरम्भ में ही लेना होता है। कोई योग्य माता-पिता नहीं चाहते कि उनकी सन्तान दस्यु हो। इसलिए आरम्भ से ही आर्यत्व का बीज बोया जाता है। आर्यत्व का अर्थ ही दायित्व है। दायित्व आर्यत्व है आर्यत्व ही दायित्व है। इस दायित्व का व्रत दिलाने के समय ही बालक को तीन धागे का जनेऊ पहनाया जाता है, जिसको वेदों ने यज्ञ का महान् साधन बताया है। (ऋ॰ 10। 57। 2) यह त्रिवृत तन्तु या तीन धागों का जनेऊ बालक को उसके तीन ऋणों की याद दिलाता है और नित्य प्रति उसके कान में घोषणा करता है कि अपने दायित्व पर ध्यान रखो।

सरलता इसकी विशेषता– यहां यह प्रश्न उठता है कि बाह्य चिन्ह तीन भागों का जनेऊ ही क्यों हो? परन्तु एक बात पर दृष्टि रखिए। भारतीय प्राचीन संस्कृति का आदर्श सरलता भी है। क्या जनेऊ से अधिक सरल और सुगम चिन्ह भी कोई हो सकता है? इतना सरल चिन्ह ध्यान में भी नहीं आ सकता।

सामाजिक मान्यता– कुछ लोग कहेंगे कि क्या जो जनेऊ धारण करता है वह स्वयं ही आर्य और श्रेष्ठ बन जाता है। इसका उत्तर यह है कि बाह्य चिन्ह तो केवल बाह्य चिन्ह ही है। किसी बाह्य चिन्ह में यह शक्ति नहीं कि वह किसी मनुष्य को किसी विशेष कार्य करने के लिए उद्यत कर सके। क्या यूनीवर्सिटी का गाऊन किसी को ग्रेजुएट बना सकती है? फिर भी गाऊन आवश्यक है।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

क्रमशः गतांक से आगे

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

"तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।"

जिनपर हमारा नियंत्रण नहीं होता या हम उन परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ होते हैं, तो प्रायः भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है। फिर कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदि हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। लेकिन तनाव में जीने की जिन्हें एक बार आदत पड़ जाती है फिर अगर उनके जीवन में तनाव नहीं भी होता तो वे लोग स्वयं तनाव पैदा कर लेते हैं। उन्हें फिर तनाव मुक्त जीवन अच्छा नहीं लगता। ऐसे लोगों को हंसते, खेलते हुए बच्चे भी बुरे लगने लगते हैं। अगर कोई हंसने-हंसाने की बात भी उनके सामने की जाए तो भी उन्हें हंसी नहीं आती। लेकिन कभी अधिक प्रयास करने से तनाव में जीने वाला व्यक्ति अगर हंस भी दे तो फिर उसके मुंह को खुला हुआ देखकर बच्चे डर जाते हैं। क्योंकि जो आदमी आठ-दस महीनों के बाद हंसेगा तो उसके चेहरे का आकार डरावना हो ही जाएगा।

तनाव के बुरे प्रभाव बचने के लिए–

1) आप स्वयं अपना निरीक्षण करें, आपके सोचने-विचारने का ढ़ंग कैसा है? इस पर गहराई से सोचें
2) दूसरों की उन्नति-प्रगति और सफलता को देखकर आपको जलन तो नहीं होती? अगर होती है तो इस दुर्गुण को दूर करें
3) किसी की सफलता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव न उभरने दें बल्कि उसकी प्रशंसा करें, उसको साबाशी देकर देखें आपके भीतर एक नया बदलाव आप महसूस करेंगे, आपके मन को मजबूती मिलेगी
4) दूसरों में कमियां खोंजना बंद करें, आपके अंदर अच्छाइयां आना शुरू हो जाएंगी, दुनिया में महत्वपूर्ण होना अच्छी बात है लेकिन अच्छा होना उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।
5) छोटी-छोटी बातों को दिल से लगाना बंद करें आपके अंदर बड़ी बड़ी समस्याओं से लड़ने की ताकत आ जाएगी, फिर आपकी समस्याएं छोटी हो जाएंगी और आप स्वयं बड़े हो जाएंगे।
6) इसलिए कहा भी जाता है कि मन के हारे हार है और मन के जीते जीत जीत, मन चंगा तो कठौति में गंगा, इस लिए हर स्थिति और परिस्थिति में अपने मन को मजबूत बनाएं।

तनाव से बचने के लिए मनोबल को ऊंचा रखें

सांसारिक उठापटक के कारण, संसार के द्वन्द्वों के कारण, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समय-समय पर ऐसे दबाव और प्रभाव बनते हैं, जिनके कारण उसका मनोबल प्रभावित होता है और धीरे-धीरे अंदर से इंसान कमजोर होने लगता है। बाहर की स्थितियां-परिस्थितियां मनुष्य को आंतरिक रूप से प्रभावित करती हैं और आंतरिक वातावरण तथा स्थितियां मनुष्य के आचरण को और व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मनुष्य जहां-जहां से बंधा होता है, वहीं-वहीं से कमजोर पड़ता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष से प्रभावित होकर किए गए अशुभ कर्मों के फल मनुष्य के सामने आते ही हैं। कर्म शुभ होगा, तो फल सुखकारी होगा, अगर कर्म अशुभ है, तो फल दुःख देने वाला होगा। इसलिए मनुष्य के जीवन में कभी सुख, कभी दुःख, कभी हर्ष, कभी उदासी, कभी हंसी, कभी रोने जैसी स्थितियां आती-जाती रहती हैं।

लेकिन एक जैसी स्थितियां हमेशा कभी किसी की नहीं रहती, अपने मन में उम्मीद की आशा-उत्साह का रोज नया दीपक जलाकर रखिए, शुभ सोचिए, सकारात्मक चिंतन कीजिए, निष्काम भाव से कर्त्तव्य कीजिए, समय बदलेगा, अच्छा होना शुरू हो जाएगा।

-क्रमशः अगले अंक में...

पृष्ठ 1 का शेष

10 दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर संपन्न

शिविर के समापन समारोह में ध्वजारोहण से कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए एवं स्मृति चिन्ह व तलवार हाथ में लिए हुए श्री योगी सूरी जी, सर्वश्री आचार्य बालकृष्ण जी तथा श्री धर्मपाल आर्य जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए अजय सहगल जी, योगी सूरी जी, विनय आर्य जी, जगवीर आर्य जी, बृहस्पति आर्य एवं अन्य महानुभाव।

श्री आनंद शर्मा जी, श्री आनंद स्वरूप जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए सर्वश्री विनय आर्य जी, जगवीर आर्य जी, योगी सूरी जी, अजय सहगल जी, धर्मपाल आर्य जी, बृहस्पति आर्य जी, बृजेश आर्य जी, संदीप आर्य एवं अन्य महानुभाव।

साधना का प्रमुख आधार सिद्ध हुए। प्रात: 4:00 बजे जागरण से लेकर रात्रि 9:00 बजे तक शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समुचित विकास के लिए आर्य वीरों को लाठी, भाला, तलवार , मलखान आदि का प्रशिक्षण, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, हवन, भजन, प्रेरक प्रसंग, देश के अमर बलिदानीयों की जीवन गाथा, आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास सब कुछ विधिवत सिखाया और समझाया गया। मनोरंजन के लिए प्रेरणा प्रद खेल जिससे शरीर तो स्वस्थ हो ही लेकिन मन भी प्रसन्न हो। यह शिविर 10 दिनों तक लगातार एक रचनात्मक कार्यप्रणाली के अनुसार सलतापूर्वक संपन्न हुआ।

बधाई दी। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी ने परेड की सलामी ली और श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सुपुत्र श्री विवेक आर्य जी, महामंत्री विनय आर्य जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, संरक्षक राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री प्रवीण तायल जी और उनके सुपुत्र एवं पुत्रवधु और आर्य समाजों के अधिकारियों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी महानुभावों ने आहुति दी और सभी शिविरार्थियों को आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यताओं और परंपराओं को अपनाने का संदेश दिया।

हम महर्षि दयानंद और आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े रहेंगे, क्योंकि वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाने से ही विश्व का कल्याण होगा। यज्ञोपवीत की हम रक्षा नहीं करते बल्कि यज्ञोपवीत हमारी रक्षा करता है। इसलिए हमेशा यज्ञोपवीत को धारण करके रखें और अपना सर्वांगीण विकास करें। इस अवसर पर सभी आर्यवीरों ने यज्ञ किया, इस सांध्यकालीन बेला में यज्ञ का विहंगम दृश्य बड़ा ही मनभावन और प्रेरक सिद्ध हुआ।

4 जून 2023 को इस विशाल रचनात्मक शिविर का सांध्य कालीन बेला में समापन एवं भव्य दीक्षांत तलवार, जूडो कराटे आदि का प्रदर्शन देखकर उपस्थित जनसमूह गदगद हो गया।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित इस प्रांतीय शिविर के समापन एवं दीक्षांत समारोह का शुभारंभ पदमश्री पूनम सूरी जी के सुपुत्र आर्य युवक समाज के अधयक्ष श्री योगी सूरी जी ने धवजारोहण करके किया। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, जे.बी.एम. ग्रुप के वित्तीय अधि कारी श्री आनंद स्वरूप जी, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री एवं डी.ए.वी. कालेज मैनेजिंग

कमांडो का प्रशिक्षण प्राप्त कर उम्दा प्रदर्शन करने वाले आर्यवीरों, शिक्षकों को आशीर्वाद सहित प्रमाणपत्र देते हुए स्वामी विदेह योगी जी, योगी सूरी जी, अजय सहगल जी, सुरेन्द्र रैली जी एवं अन्य महानुभाव।

शिविर का उदघाटन समारोह

28 मई 2023 को इस दस दिवसीय शिविर के भव्य उदघाटन समारोह के शुभारंभ अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री एस. के. शर्मा जी ने ध्वजारोहण कर कार्यक्रम का आरंभ किया। उन्होंने अपने संदेश में आर्यवीरों को वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाने पर बल दिया। महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के आयोजनों की सफलता के लिए उन्होंने प्रशंसा और

यज्ञोपवीत संस्कार

29 मई 2023 को पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के निदेशक, आचार्य बालकृष्ण जी के पावन सानिध्य में सैकड़ों आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार विधिवत संपन्न हुआ। आचार्य श्री बालकृष्ण जी ने सभी आर्यवीरों को संबोधित करते हुए अपने विशेष संदेश ने कहा कि आप सब आज यज्ञोपवीत धारण कर रहे हैं। इसको हमेशा अपने हृदय से लगाए रखना और इस अवसर पर यह संकल्प अवश्य करना कि समारोह संपन्न होना सुनिश्चित था। आज के मौसम में गर्मी के साथ साथ उमस कुछ ज्यादा ही थी, इस विपरीत वातावरण में आर्य वीरों ने अपनी पूरी वेशभूषा में अनुशासित और व्यवस्थित होकर जब व्यायाम प्रदर्शन करना आरंभ किया तो ऐसा लगा मानो जैसे वर्षों वर्ष अभ्यास करके देश के जांबाज सैनिक राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के अवसर पर अपने शौर्य और साहस का प्रदर्शन कर रहे हैं। आर्य वीरों के द्वारा सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, लाठी, भाला, कमेटी के सचिव श्री अजय सहगल जी, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्रीमती सुषमा शर्मा जी, राष्ट्र निर्माण पार्टी के संरक्षक आर्यनेता ठाकुर विक्रम सिंह जी, सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान डा. सत्यवीर जी, परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री सत्यानंद आर्य जी, श्री वी. के. चोपडा जी, डॉ. आनंद शर्मा, आचार्य ऋषिपाल जी एवं अन्य अनेक आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडलों के सम्मानित अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य

- शेष पृष्ठ 5 पर

और आर्यजन महानुभाव, शिवरार्थी बच्चों के माता-पिता, बहनें, परिवार जन और युवा आदि उपस्थित थे।

विशेष उद्बोधन

आर्य वीर दल के इस समापन समारोह में उपस्थित आर्य नेताओं के उद्बोधन समस्त शिवरार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादाई सिद्ध हुए। राष्ट्र निर्माण पार्टी के संरक्षक ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आर्य वीरों को शुभकामनाएं और आशीर्वाद देते हुए अपने उद्बोधन में कहा की महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विचारधारा को अपनाने से ही मनुष्य कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होता है। आज इस अवसर पर मैं आप सभी को आशीर्वाद देता हूं तथा आप सभी के लिए उज्जवल भविष्य ईश्वर से प्रार्थना करता हूं

डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री पूनम सूरी जी के सुपुत्र माननीय योगी सूरी जी ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि सभी आर्यवीर बधाई के पात्र हैं, जिस तरह से आपने इस शिविर में अपने जीवन को तप त्याग स्वाध्याय और संयम से तपाया है, यह अपने आप में अत्यंत प्रशंसनीय है जहां एक तरफ आप सब स्कूली शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं वही आर्य वीर दल के माध्यम से वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों को अपनाकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अग्रसर होना आप सभी का परम कर्तव्य है, आप सभी निश्चित रूप से आगे बढ़ेंगे और सफलता को प्राप्त करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है

महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मंत्री एवं डीएवी मैनेजिंग कमेटी के सचिव श्री अजय सहगल जी ने सभी आर्यवीरों को आशीर्वाद और शुभकामनाएं देते हुए अपने पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी और हमेशा वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों को अपनाने का संदेश दिया। श्री सत्यवीर चौधरी जी ने आर्यवीरों को चरित्र निर्माण और आत्मरक्षा के महत्व को बताया, वहीं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से सफल होने की प्रेरणा दी और आर्यवीरों को आशीर्वाद तथा शुभकामनाएं प्रदान की। श्री विनय आर्य जी ने अपने चिर परिचित अंदाज में आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास का स्वाध्याय करने और शारीरिक रूप से तथा मानसिक रूप से सक्षम बनने के गुण प्रदान किए। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान डॉ. सत्यवीर जी ने सभी आर्यवीरों को वैदिक धर्म के पथ पर चलने की प्रतिज्ञा कराई, साथ में आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश के संचालक और महामंत्री भी साथ में रहे, बड़ा ही सुंदर प्रेरक दृश्य सभी के मन को आकर्षित कर रहा था।

परेड का निरिक्षण एवं सलामी करते हुए सर्वश्री योगी सूरी जी, वी. के. चोपड़ा जी, धर्मपाल आर्य जी, अजय सहगल जी, आनंद स्वरूप जी, डॉ. सत्यवीर शास्त्री एवं अन्य महानुभाव।

आर्यवीरों ने अपने शिविर के अनुभव बताते हुए कहा कि यहां पर शिविर के प्रारंभ में तो हमारा मन नहीं लग रहा था लेकिन अब हमें यहां पर इतना अच्छा लग रहा है कि अगर शिविर 10 या 5 दिन और आगे बढ़ जाए तो हमें और प्रसन्नता होगी। हमने यहां पर संध्या, हवन, लाठी, भाला और तलवार चलाना सीखा, लेकिन इसके साथ-साथ जो खेल-खेल में शिक्षा प्राप्त की वह एक विशेष अनुभव है। देश धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों कि जो कहानियां और क़िस्से हमें पसंद आए, वह हम कभी नहीं भूलेंगे, हम भविष्य में लगातार शाखा लगाएंगे और आर्य शिविरों में भाग लेंगे।

शिविर में आगंतुक सभी अतिथियों का सैनिक सम्मान के साथ अभिवादन, अभिनंदन स्वागत और सम्मान किया गया। आर्य युवक समाज के अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी, पंतजलि योगपीठ के निदेशक आचार्य बालकृष्ण जी, श्री एस के शर्मा जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री बच्चन सिंह जी, पूर्व शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार, एवं अध्यक्ष महर्षि दयानंद गोशाला गाजीपुर, श्री वी. के. चोपड़ा जी, निदेशक, डीएवी स्कूल, साहिबाबाद, प्रिंसिपल श्री मनोज ठाकुर जी, श्री सत्यवीर चौधरी जी, श्री श्रद्धानंद शर्मा जी, संरक्षक, आर्य केंद्रीय सभा गाजियाबाद, एवं अनेक अन्य महानुभावों को आर्य वीरदल की ओर से स्मृति चिन्ह और सम्मान प्रदान किया गया। समापन के अवसर पर आर्यवीरों को शुभकामनाएं और आशीर्वाद देने वाले प्रमुख अधिकारियों में सर्वश्री सत्यानंद आर्य, कर्नल रमेश मदान, रविदेव गुप्ता, कृपाल सिहं, सुरेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, सुखवीर आर्य, उषाकिरण कथूरिया, पीयूष आर्य, हरिओम बंसल, ईश नारंग, धर्मवीर आर्य, प्रवीण आर्य, दानवीर कर्ण, मास्टर कृष्णपाल आर्य, मास्टर समर सिंह आर्य, राकेश आर्य, सतेन्द्र मिश्रा, वीरेन्द्र आर्य, प्रदीप आर्य, नरेन्द्र आर्य (रेवाड़ी), अमरदीप आर्य पतंजलि, सतीश चडडा, संदीप उपाध्याय (साहिबाबाद) इत्यादि सभी वेद प्रचार मंडलों एवं आर्य समाजों के अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्यवीर दल के समर्पित शिक्षक

- शेष पृष्ठ 6 पर

समापन समारोह के अवसर पर भव्य व्यायाम प्रदर्शन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करते हुए आर्यवीर, जिनमें लाठी, भाला, तलवार, मलखम, कमांडो, जूडो-कराटे आदि का प्रदर्शन इतना प्रभावशाली सिद्ध हुआ कि उपस्थित जनसमूह रोमांचित और भावविभोर हो उठा।

Three Kinds of Men

The Vedas state univocally that 'three kinds of men have. been created on this earth of ours : (i) the brilliant, the artist and the emb llished; (ii) the tough, the compact-bodied and the endurant; and (iii) the thoughtful, the clairvoyant and the reason-given. The Vedas mostly use Deva, Sadhya and Rishi to express the three respectively. Occasionally, they have also used other words to express the same. The words like Ashva, Pitar and Vasu, meaning respectively full of common sense or horse sense, steerer and abode of virtues,. all of which, in a sense, denote the same as Rishi (having reason and thinking) have, along with similar expressions, heen used all over the four Vedas. Similarly, the words like Sadhu and Manushya, meaning respectively endurance, born out of penance or regulated way of living, and capacity to undergo hardship, on consideration of things and circumstances, stand for Sadhya and are used here and there in the Vedas. The word Deva, of course, has been used more or less uniformly all over the Vedas.

The most important Vedic verses, showing the threefold division or classification of mankind, are being given hereunder :—

1. 'By Him (The Divinity) are created those who are the bright (men brilliant in artistic production and embellish mem), the tough (compact-bodied men) and the seer (thoughtful men)'— Rigved, 10.90.7; Yajurved, 31.9; Atharvaved, 19.6.11 with slight variation ("Thena dhevaa ayajantha saadhhyaa rishayashhcha ye").

2. '0 the leader (king), appoint only those, who are Thoughtful (having horse sense or common sense), glorious (skilled in arts and crafts) and compact-bodied (tough)'— Rigved, 6.16 43; Yajurved, 13 36; Samaved, 1 1(1).3.5 ("Agne yukshvaa hi ye thavaashhvaso dheva saadhhavah").

3. 'On whom (the leader or king) the bright (men brilliant in arts and crafts), the steerer (thoughtful men) and the tough (men ready to undergo hardship) always depend for a living'— Atharvaved, 10.6.32 ("Yam dhevaah pitharo manushya-upajeevanthi sarvadhaa").

4. 'Verily, there are three kinds of men (born on account of bondage of Karma)'— Atharvaved, 10.8.3 ("Thisro ha prajaa").

It's quite interesting to note that modern anthropologists and ethnologists, also, speak of the three basic divisions of mankind or the three ethnic groups : the Aryans, the Caucasians or the Indo-

Aryans; the Mogoloids, the yellow people or the far easterns; and the Negroids or the tough-skinned. The first corresponds to the Vedic Rishi or thoughtful class; the second to the Vedic Deva class, skilled in arts and crafts; and the third to the Vedic Sadhya or Siddh class,toughskinned and capable of putting up with all rigours of climate.

But it should, definitely, be made clear that the Vedas don't talk of races but speak of the three distinct-trailed' people.

पृष्ठ 5 का शेष

जिन्होंने रात-दिन एक करके आर्यवीरों को प्रशिक्षण दिया उनमें शिक्षक सर्वश्री लक्ष्य आर्य, दिनेश आर्य, धर्मवीर आर्य, सुरेश आर्य, राम नारायण सिंह, करन आर्य, रवि आर्य, विनीत आर्य, सूरज आर्य, सुशील आर्य, बॉबी आर्य, विशाल आर्य, सोनू आर्य, गौरव आर्य, मनोज आर्य, तुशाल, सहशिक्षक सर्वश्री सुकेश आर्य, धीरज आर्य, रूपेश आर्य, मोहित आर्य, प्रियांशु आर्य, गौरव आर्य, शिवा आर्य, इशांत, अंकित, अमन, निखिल, अविनाश, हर्षवर्धन, तनिष्क, लव, इत्यादि प्रमुख थे।

शिविर समापन के अवसर पर विजेता आर्यवीरों में पुरस्कृत आर्य वीर श्रेणी- शिविर सर्वश्रेष्ठ गर्वित, प्रथम स्थान सचिन, द्वितीय स्थान जयंत, तृतीय स्थान अमित, बाल आर्यवीर श्रेणी प्रथम स्थान प्रशांत, द्वितीय स्थान अर्णव, तृतीय स्थान तेजस व विभिन्न प्रतियोगिताओं में अनेकों आर्यवीरो को पुरस्कृत किया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन बृहस्पति आर्य, महामंत्री आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश ने बहुत ही सुचारु रूप से किया। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक जगबीर आर्य जी, बृहस्पति आर्य, सुन्दर आर्य जी, रोहताश आर्य, वीरेश आर्य, आशीष आर्य, वाचस्पति शास्त्री, पवन आर्य, सोनू आर्य, संदीप आर्य, दिनेश आर्य, राघव आर्य, यश आर्य, मोहित आर्य, प्रिंस आर्य, वैभव आर्य, मुकुन्द आर्य, डॉ. रामभरोसे साह, संतोष आर्य, साहिल आर्य, नरेन्द्र आर्य, राजकुमार आर्य, मनीष आर्य आदि अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के पूर्ण पुरुषार्थ से शिविर के आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में 9:00 बजे तक लगातार कार्यक्रम चलता रहा और प्रीतिभोज के साथ संपन्न हुआ।

यज्ञोपवीत संस्कार का आस्था चौनल व आर्य सन्देश टी.वी. के द्वारा व दीक्षांत समारोह का आर्य सन्देश टी. वी. के माध्यम से लाइव प्रसारण किया गया। दोनों ही चैनलों का विशेष आभार।

-बृहस्पति आर्य, महामंत्री

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

मुक्ति-मुक्ति के साधन-कर्ता

29-मुक्ति

जन्म-मरण दुरितादि के
दु:खोदधि कर पार ।
सुख स्वरूप, परमेश की प्राप्ति
'मुक्ति' का सार ।।39।।

30-मुक्ति के साधन

स्तुति, विनयोपासना, धर्म,
पुण्य, सत्संग ।
परहित, सेवन तीर्थ का,
सत्पुरुषों का संग ।।40।।
ईश-कृपा विश्वास से
श्रेष्ठ कर्म-आचार ।
दुष्ट कर्म तज 'मुक्ति के
साधन' सत्य विचार ।।41।।

31-कर्ता

जो स्वतन्त्रता से सदा
ताने कर्म-बितान ।
साधन हों स्वाधीन सब
उसको 'कर्ता' मान ।।42।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

वे दिलजले आर्यवीर

प्रसिद्ध काकोरी केस के अभियुक्त प्रणवीर पण्डित श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' के सम्बन्ध में तो बहुत भाई जानते हैं कि वे एक दृढ़ आर्यसमाजी थे, परन्तु उनके सहयोगी ठाकुर रोशनसिंह जी के बारे में आर्यसमाज के सब लोगों को आज भी यह ज्ञात नहीं कि वे भी एक सिद्धान्तनिष्ठ, ईश्वरभक्त आर्यपुरुष थे। वे काल-कोठरी में ही थे तो, उनके पूज्य पिताजी चल बसे। यह समाचार सुनकर उनके नयनों से एक अश्रु भी न गिरा। केवल इतना ही कहा 'तत् सत्, तत् सत्, तत् सत्'।

फाँसी-दण्ड सुनकर भी उन्होंने संध्योपासना व व्यायाम के नियम को पूर्ववत् निभाया। फाँसी पाने से कुछ समय पूर्व भी संध्या व स्नान करके उन्हें दण्ड पेलते देखकर जेल अधिकारी दंग रह गया।

फाँसी पाने से लगभग एक सप्ताह पूर्व अपने मित्र को लिखे पत्र में आपने ये मार्मिक बातें लिखीं, ''संसार में जन्म लेकर मरना तो अवश्य है। संसार में कुकर्म करके मनुष्य अपने आपको अपकीर्ति का भागी न बनाये और मरते समय ईश्वर का ध्यान रखे। ये दो बातें होनी चाहिए। ईश्वर की कृपा से ये दोनों बातें मेरे साथ हैं। इसलिए मेरी मृत्यु किसी प्रकार भी शोकजनक नहीं है। दो वर्ष से बाल-बच्चों से पृथक् हूँ। इस अवधि में ईश्वर की उपासना का बहुत अच्छा अवसर मिला।''

यह ऐतिहासिक पत्र तो आजकल की पुस्तकों में मिलता नहीं। इन वीरों के बलिदान के समय छपी एक पुस्तक में यह छपा था। वह पुस्तक विदेशी शासन ने जब्त कर ली थी।

वीर रोशनसिंह को प्रयाग में फाँसी दी गई। आज उस स्थान पर जवाहरलालजी की माता के नाम मर मेडिकल कालेज है। इनके शव की शोभायात्रा निकालने की अनुमति तो न मिली, परन्तु उसी पुस्तक में यह लिखा है कि इनका अन्तिम संस्कार आर्यसामाजिक रीति से किया गया।

इनके अन्तिम संस्कार की एक कहानी है। इनका सुपुत्र महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था। वह प्रयाग पहुँचा। वहाँ आर्यसमाज चौक प्रयाग में आया और कहा कि मेरे पिताजी का अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से ही होगा। संस्कार कौन कराएगा? नगर में दमनचक्र चल रहा था तथापि श्री विश्वप्रकाशजी (पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्यायजी के द्वितीय सुपुत्र) ने कहा, ''मैं चलता हूँ। मैं कराऊँगा।''

विश्वप्रकाशजी ने 1971 ई. में हमें सगर्व बताया था कि रक्तसाक्षी श्री रोशनसिंह का अन्तिम संस्कार मैंने करावाया था। उसी अलभ्य पुस्तक में लिखा है कि ठाकुरजी 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण करते हुए हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये। पाठकवृन्द! जब लोग क्रांतिकारियों के शव के समीप भी नहीं फटकते थे, उस युग में यह क्या कोई साधारण-सी बात थी कि दिलजले आर्यवीर बड़े जोश से संस्कारविधि हाथ में लिए उनके अन्तिम संस्कार कराने को पहुँच जाते थे।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

व्यायाम की प्रेरणा– जब 16 वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जब तक वृद्धावस्था न आवे तब तक व्यायाम करे। बहुत न करें किन्तु 40 बैठक करे और 30 वा 40 दण्ड करे। कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करे, फिर लोट करे। उसको भोजन से एक घंटा पहिले करे, सब अभ्यास जब कर चुके उससे एक घंटा पीछे भोजन करे, परन्तु दूध जो पीना होय तो अभ्यास से पीछे शीघ्र ही पीवे। उससे शरीर में रोग न होगा, जो कुछ खाया वा पिया सो सब परिपक हो जाएगा, सब धातुओं की वृद्धि होगी तथा वीर्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है, शरीर दृढ़ हो जाता है और हड्डियां पुष्ट हो जाती हैं। जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात् सब अंग सुन्दर रहते हैं। परन्तु अधिक न करना।

पदार्थ विधा के सम्बन्ध में– यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात रसायन जो कि पदार्थ विद्या उस से उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ। **–स्वमंतव्यामंतव्य**

प्रजातन्त्र– मनुष्यों को चाहिये कि जो सबसे अधिक गुण, कर्म और स्वभाव तथा सबका उपकार करनेवाला सज्जन मनुष्य है, उसीको सभाध्यक्ष का अधिकार देके राजा माने अर्थात् किसी एक मनुष्य को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देवें, किन्तु शिष्ट पुरुषों की जो सभा है, उसके आधीन राज्य के सब काम रखें।

ऋग्वेद- मण्डल 1 सूक्त 7 मन्त्र 3

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा द्वारा 10 दिवसीय स्नातक पुनश्चर्या एवं संस्कृत संभाषण शिविर संपन्न

आर्य समाज को विश्व स्तर पर योग्य विद्वान प्रदान करने वाले, आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा, उत्तर प्रदेश की हीरक जयंती, 75वें वर्ष पर, 21 से 30 मई 2023 तक गुरुकुल के प्रांगण में आयोजित स्नातक पुनश्चर्या एवं संस्कृत संभाषण शिविर अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुकुल के पूर्व स्नातक, वर्तमान में अध्ययनरत ब्रह्मचारी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम के आचार्य धनंजय शास्त्री जी सहित समस्त विद्यार्थी सम्मिलित हुए। 10 दिनों तक लगातार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की अनुशासित दिनचर्या, संस्कृत संभाषण और प्रेरक गतिविधियां लगातार चलती रही। प्रातः जागरण से लेकर शयन तक सारी व्यवस्थाएं और योजनाएं आदर्श सिद्ध हुई। गुरुकुल के प्रधान श्री योगराज अरोड़ा जी, मंत्री, श्री विनय विद्यालंकार जी, कुलसचिव डॉ. वागीश आचार्य जी, कोषाध्यक्ष शिव स्वरूप जी इत्यादि महानुभावों का मार्गदर्शन और आशीर्वाद सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। प्रतिदिन के कार्यक्रमों को सभी प्रमुख समाचार पत्रों में निरंतर स्तरीय स्थान मिला। गुरुकुल की ओर से पूर्व स्नातकों, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों, गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम, एल. ब्लाक, हरी नगर नई दिल्ली के अधिकारियों का धन्यवाद किया गया। शिविर में सहयोगी महानुभावों का भी आभार व्यक्त किया गया। प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

–डॉ. ब्रजेश गौतम

पृष्ठ 2 का शेष

है? अब तक जबकि वे अपने मृतक परिजनों के शवों की पहचान तक नहीं कर पाए, कुछ की चिता अभी ठंडी भी नहीं हुई, घायल लोग अस्पताल में कराह रहे हैं, उनके ऊपर क्या गुजरती होगी जब वे इनके आरोप-प्रत्यारोपों के पीछे निहित भावनाओं को देखते, सुनते और समझते होंगे?

अब यहां तक इस बड़ी दुर्घटना के प्रति राजनीतिक दलों और सरकारों की संजीदगी मानवीय मूल्यों के अनुसार उचित प्रतीत हो रही थी। लेकिन जैसे ही थोड़ा समय बीता तो सब कहीं न कहीं अपने वास्तविक स्वरूप में लौट आए। सबने एक दूसरे के ऊपर अपने अपने धनुष बाण निकाल लिए और प्रहार शुरू कर दिए। अभी जबकि इस दुर्घटना को 5 दिन ही बीते हैं और ऐसे में एक तरफ दुर्घटना के कारणों और दोषियों को लेकर सीबीआई जांच शुरू कर दी गई है, वहीं विपक्षी दलों के पूर्व रेल मंत्रियो ने इसका विरोध भी शुरू कर दिया है। इस दिल दहलाने वाले रेल हादसे को लेकर सच्चाई को सामने लाने के लिए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सीबीआई जांच की सिफारिश की और मंगलवार को सीबीआई टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू ही की थी। तुरंत देश के पूर्व तीन रेल मंत्रियों ने सीबीआई जांच का विरोध भी शुरू कर दिया। इस पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने पीएम मोदी को एक पत्र लिखा। जिसमें 11 बिंदु उठाए हैं और तर्क दिया है कि सीबीआई अपराध की जांच करती है, रेल दुर्घटनाओं की नहीं। पत्र में वर्ष 2016 में हुए कानपुर ट्रेन हादसे का भी जिक्र किया। और जांच बंद हो गई और अभी भी यह सवाल बना हुआ है कि 150 मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है। उन्होंने आरोप लगाया कि रेल मंत्री के सभी खोखले सुरक्षा दावे अब बेनकाब हो गए हैं। 17 जून 2013 से 26 मई 2014 तक मल्लिकार्जुन खडगे देश के रेल मंत्री रहे हैं।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मोदी सरकार पर तंज कसते हुए कहा, सीबीआई जांच का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। मैंने 12 साल पहले ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस दुर्घटना का मामला भी सीबीआई को दिया था जिसका कोई हल नहीं हुआ। ऐसे ही कांग्रेस के पूर्व रेल मंत्री पवन बंसल ने भी सीबीआई जांच को केवल दिखावा बताया और इसका विरोध किया। असल में उपरोक्त एवं अन्य अनेक विपक्षी नेताओं ने भी सीबीआई जांच का विरोध करते हुए सीधे रेलमंत्री के इस्तीफे की पुरजोर मांग की है।

जहां बंगाल में विपक्षी बीजेपी नेता सुभेंदु अधिकारी ने टीएमसी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया है कि ओडिसा ट्रेन हादसे के पीछे टीएमसी की साजिश है। सुभेंदु ने सीबीआई से जांच कराने पर सवाल उठाने जाने को लेकर ममता बनर्जी पर भी निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि सीबीआई को इस बात की जांच करनी चाहिए कि तृणमूल कांग्रेस के नेताओं ने दो रेल अधिकारियों के बीच शालीमार-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस के बहनागा रेलवे स्टेशन के पास पटरी से उतरने के बारे में फोन पर हुई बातचीत के रिकॉर्ड तक कैसे पहुंची? सुभेंदु अधिकारी ने कहा, तृणमूल नेताओं ने सोशल मीडिया पर रेलवे के दो वरिष्ठ अधिकारियों के बीच टेलीफोन पर हुई बातचीत को देखा और प्रसारित किया। यह कैसे संभव हो सकता है? मुझे नहीं लगता कि कॉल रेलवे ने लीक की होगी। मुझे पूरा संदेह है कि कोलकाता पुलिस के कुछ अधिकारियों ने इसकी रिकॉर्डिंग की है।

बीजेपी नेता ने यह भी कहा कि वह कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करेंगे और फिर यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करेंगे कि सीबीआई बालासोर ट्रेन दुर्घटना की जांच के दायरे में इस कॉल लीक प्रकरण को शामिल करे, जिसमें पश्चिम बंगाल के कई लोगों सहित लगभग 288 लोग मारे गए हैं। सुवेंदु अधिकारी ने कहा, अगर कुछ नहीं होता है, तो मैं व्यक्तिगत रूप से भुवनेश्वर जाऊंगा और अपनी याचिका के साथ वहां सीबीआई कार्यालय जाऊंगा। अगर तब भी कुछ नहीं होता है, तो मैं अदालत का रुख करूंगा।

पक्ष और विपक्ष में कौन सही और कौन गलत है, घटना के कारण क्या हैं यह तो जांच के बाद पता चलेगा या फिर ईश्वर ही जानता है। लेकिन इतना सबको अवश्य समझना चाहिए कि हर स्थिति परिस्थिति में, लाभ में, हानि में, जय और पराजय में मानवता जीवित रहनी ही चाहिए। धर्म में तो राजनीति का निषेध है लेकिन राजनीति में धर्म अवश्य होना चाहिए। तभी मनुष्य मनुष्य कहलाएगा और मनुष्यता जीवित रहेगी। इसलिए राजनीतिक दलों के नेताओं को इस पर अवश्य विचार करना चाहिए कि किसी दुर्घटना में या प्राकृतिक आपदा में केवल स्वार्थ का अवसर ही परमार्थ का भाव भी मन में होना चाहिए। मुखौटे की राजनीति संसार में चल सकती है, ईश्वर के यहां देर हो सकती है लेकिन अंधेर नहीं।

–संपादक

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

सोमवार 05 जून, 2023 से रविवार 11 जून, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 07-08-09 जून, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 07 जून, 2023

आर्य समाज मंदिर, 15 हनुमान रोड

पुरोहित डॉ. कर्णदेव आर्य शास्त्री जी का विदाई समारोह संपन्न

दिल्ली की सुप्रसिद्ध, 100 साल पुरानी आर्य समाज, 15 हनुमान रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली के लंबे समय तक पुरोहित पद पर सेवाकार्य करने वाले डॉ. कर्णदेव आर्य शास्त्री जी का विदाई समारोह 4 जून 2023 को हर्षोल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। प्रातः काल आचार्य जी ने सपरिवार यज्ञ में यजमान बनकर आहुतियां दी और सर्वमंगल की कामना की।

इसके उपरांत डॉ. विद्या प्रसाद मिश्र जी का प्रेरक उद्बोधन हुआ और उन्होंने डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी की कर्तव्यनिष्ठा और योग्यता कि उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की तथा पुरोहित के कर्तव्यों की भी सरल शब्दों में व्याख्या की। उन्होंने पुरुषार्थ की व्याख्या करते हुए डॉ. कर्णदेव जी को महान पुरुषार्थी बताया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आचार्य छवि कृष्ण शास्त्री जी, आचार्य सत्यपाल मधुर जी, आचार्य भद्रकाम वर्णी जी, आचार्य वीरेंद्र विक्रम जी, आचार्य श्याम देव जी, आचार्य अनिल शास्त्री जी, कर्नल रविन्द्र वर्मा जी, श्री वेदव्रत शर्मा जी, श्री दयानंद यादव जी, श्री सी.वी.एस चौहान जी, श्री विरेश बुग्गा जी, श्री विजय दीक्षित जी, श्री रमेश मिश्र जी एवं अनेक अन्य आर्य समाज के अधिकारियों ने कर्णदेव जी के सेवाकार्यों की प्रशंसा की और उनके प्रति आभार व्यक्त किया। सभी महानुभावों ने आर्य समाज की ओर से उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की ईश्वर से प्रार्थना की तथा पुष्प गुच्छ एवं शाल तथा स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। आर्य समाज हनुमान रोड के यशस्वी प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी डेनमार्क से ऑनलाइन साक्षी रहे और उन्होंने वहीं से अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

डॉ. कर्णदेव जी अपने उद्बोधन में समाज के सभी अधिकारियों का आभार व्यक्त किया और अपनी मधुर स्मृतियों का वर्णन भी किया। मंच का संचालन समाज के उप मंत्री एवं रघुमाल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल के चेयरमैन श्री संजय जी ने कुशलतापूर्वक किया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपूर्ण कार्यक्रम शांति पाठ के साथ संपन्न हुआ तथा सभी विद्वान, अधिकारियों, सदस्यों और कार्यकर्ताओं ने प्रीतिभोज ग्रहण किया।

-मंत्री, विजय दीक्षित

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह